अध्याय-6

जनसंख्या

(POPULATION)

किसी भी देश का आर्थिक विकास मुख्यत: दो बातों पर निर्भर करता है-प्राकृतिक संसाधन तथा मानवीय संसाधन। वास्तव में देखा जाए तो आर्थिक विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान मानवीय संसाधनों अर्थात् जनसंख्या का है; क्योंकि जनसंख्या आर्थिक विकास का साधन ही नहीं, साध्य भी है। मानव, संसाधनों का निर्माण एवं उपभोग करते हैं। वे स्वयं भी विभिन्न गुणों वाले संसाधन होते हैं। जनसंख्या अथवा मानवीय प्रयत्नों के अभाव में किसी भी प्रकार की आर्थिक वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन संभव नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी देश का वास्तविक स्वरूप उस देश की भूमि अथवा जलाशयों या खादानों में, पशुओं अथवा धन-दौलत में नहीं वरन उस देश के स्वच्छ एवं सुखी पुरुषों, बच्चों, एवं स्त्रियों में निहित है।

भारत में जनसंख्या का आकार एवं वृद्धि बेहद भयावह है। इसे **'जनसंख्या विस्फोट'** का नाम दिया जाता है। इस जनसंख्या विस्फोट ने देश की समस्त विकास योजनाओं को प्रभावित किया है। मानव पृथ्वी के संसाधनों का उत्पादन एवं उपयोग करता है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि एक देश में कितने लोग निवास करते हैं तथा उनकी कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं? हमारे देश की जनसंख्या से सम्बन्धित जानकारी हमें प्रदान करती है।

बच्चों, तुम बढ़ती जनसंख्या के अंग हो। आज हम जनसंख्या से जुड़े निम्नांकित तीन बिन्दुओं पर विचार करते हैं-

1. जनसंख्या का आकार एवं वितरण ।
2. जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया ।
3. जनसंख्या के गुण या विशेषताएँ ।

जनसंख्या आकार एवं वितरण

1 मार्च 2001 ई॰ तक भारत की जनसंख्या 102.8 करोड़ लाख थी जो कि विश्व

© BSTBPC
BSTBPC NOT TO BE REPUBLISHED

की कुल जनसंख्या का 16.7 प्रतिशत थी। ये करीब 103 करोड़ लोग भारत के 32.8 लाख वर्ग कि०मी० (विश्व के स्थलीय भू-भाग का 2.4 प्रतिशत) के विशाल क्षेत्र में असमान रूप से वितरित हुए हैं (चित्र 6.1)।

जनगणना

एक निश्चित समयांतराल की आधिकारिक गणना को जनगणना कहते हैं। भारत में सबसे पहले 1872 ई० में जनगणना की गई थी। सन् 1881 में पहली बार सम्पूर्ण जनगणना की गयी थी। उसी समय से प्रत्येक दस वर्ष पर जनगणना होती है।

भारतीय जनगणना जनसांख्यिकी, समसामयिक तथ्यों तथा आर्थिक आँकड़ों का सबसे बृहद स्रोत है। आप अपने पुस्तकालय में जनगणना रिपोर्ट देख सकते हैं।

2001 की जनगणना के अनुसार देश में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जहाँ कुल आबादी 16.60 करोड़ है। उत्तर प्रदेश में देश की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है। दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र है। जहाँ 9.68 करोड़ आबादी

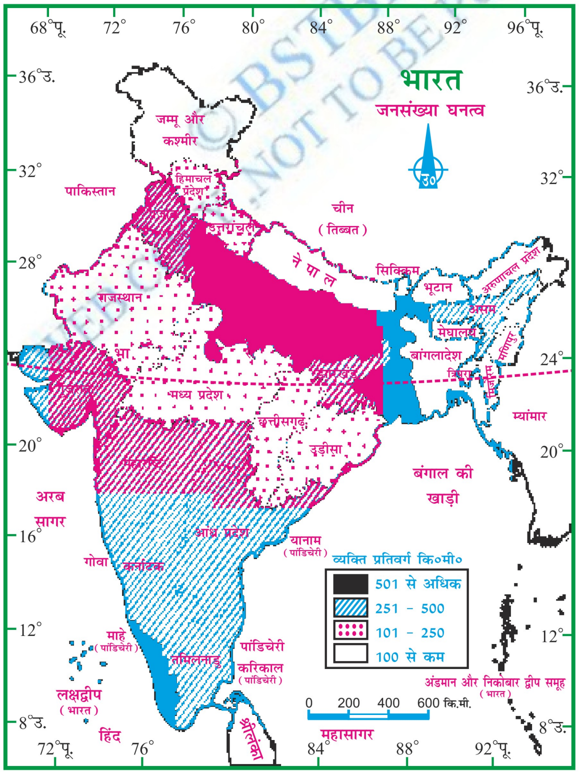

चित्र 6.1 भारत-जनसंख्या घनत्व (2001)

(कुल जनसंख्या का 9.42 प्रतिशत) है। तीसरे स्थान पर बिहार की आबादी 8.29 करोड़ (कुल देश की जनसंख्या का 8.06 प्रतिशत) है। इन बड़े राज्यों के विपरीत हिमालय क्षेत्र के राज्य सिक्किम की आबादी केवल 5 लाख ही है तथा लक्षद्वीप में केवल 60 हजार लोग निवास करते हैं।

भारत की लगभग आधी आबादी केवल पाँच राज्यों में निवास करती है। ये राज्य हैं- उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं आन्ध्र प्रदेश। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है जिसकी आबादी भारत की कुल जनसंख्या का केवल 5.5 प्रतिशत है।

जानकारी प्राप्त कीजिए - भारत में जनसंख्या के असमान वितरण का क्या कारण है ?

घनत्व के आधार पर भारत में जनसंख्या वितरण

© DSTRPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य भूमि के प्रति इकाई पर अधिवासित होनेवाली जनसंख्या है। भारतीय जनगणना विभाग द्वारा स्तरीय मापक के रूप में प्रतिवर्ग कि०मी० को एक इकाई माना गया है। इस दृष्टि से, भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत का औसत जनसंख्या घनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है लेकिन इसमें भारी विषमता है। मैदानी राज्यों में सर्वाधिक घनत्व है, तटीय राज्यों में भी काफी घनत्व है लेकिन पर्वतीय राज्यों में, अधिवासी आर्थिक संरचनात्मक सुविधा के कमी के कारण, कम घनत्व पाये जाते हैं। पठारी राज्यों में सामान्य घनत्व की स्थिति है।

भारतीय राज्यों में सर्वाधिक घनत्व प० बंगाल का है। यहाँ औसतन प्रतिवर्ग कि०मी० 904 व्यक्ति रहते हैं। इसके बाद क्रमश: बिहार (881), केरल (819) का स्थान आता है। सबसे कम घनत्व अरुणाचल प्रदेश अर्थात् पर्वतीय राज्य का है जहाँ औसत घनत्व मात्र 13 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है। केंद्र शासित प्रदेशों को सम्मिलित कर देखा जाय तो सर्वाधिक घनत्व दिल्ली में है। यह 9340 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है। लेकिन सबसे कम घनत्व अरुणाचल प्रदेश में ही है। केंद्र शासित प्रदेशों में अंडमान निकोबार द्वीप समूह का घनत्व मात्र 34 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है।

जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र होने के कारण भारत के औसत घनत्व में भी तेजी से वृद्धि हुई है। यह 1901 ई॰ में मात्र 37 व्यक्ति वर्ग कि॰मी॰ था जो 2001 में बढ़कर 325 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि॰मी॰ हो चुका है।

जानकारी प्राप्त कीजिए

एक तालिका बनायें जिसमें भारत के सभी राज्यों के नाम, कुल जनसंख्या तथा घनत्व को लिखें। इसकी मदद से कम घनत्व और अधिक घनत्व के राज्यों की तुलना कीजिए।

© BSTBPC

जनसंख्या वृद्धि-

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ होता है, किसी विशेष समान अंतराल में जैसे 10 वर्षों के भीतर, किसी देश-राज्य के निवासियों की संख्या में परिवर्तन। इस प्रकार के परिवर्तन को दो प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। पहला, सापेक्ष वृद्धि तथा दूसरा, प्रति वर्ष होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के द्वारा।

प्रत्येक वर्ष या एक दशक में बढ़ी जनसंख्या कुल संख्या में वृद्धि का परिणाम है। पहले की जनसंख्या (जैसे- 1991 की जनसंख्या) के बाद की जनसंख्या (जैसे 2001 की जनसंख्या) से घटा कर इसे प्राप्त किया जाता है। इसे 'निरपेक्ष वृद्धि' कहा जाता है।

जनसंख्या वृद्धि का दूसरा पहलू प्रतिवर्ष प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है, जैसे प्रति वर्ष प्रतिशत वृद्धि की दर का अर्थ है कि दिए हुए किसी वर्ष की मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर 2 व्यक्तियों की वृद्धि। इसे **वार्षिक वृद्धि दर** कहा जाता है। भारत की आबादी 1951 में 3,610 लाख से बढ़ कर 2001 में 10,280 लाख हो गई है। सिर्फ 1921 में ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि हुई है।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEB COPY

सारणी 6.1 भारत की जनसंख्या वृद्धि : एक झलक

वर्ष	कुल जनसंख्या (लाख में)	एक दशक में सापेक्ष वृद्धि (लाख में)	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत)
1951	361.0	42.43	1.25
1961	439.2	78.15	1.96
1971	548.2	108.92	2.20

1981	683.3	135.17	2.22
1991	846.4	163.09	2.14
2001	1028.7	182.32	1.93

सारणी 6.1 एवं चित्र 6.2 दर्शाता है कि 1951 से 1981 तक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर नियमित रूप से बढ़ रही थी। ये जनसंख्या में तीव्र वृद्धि की व्याख्या करता है जो 1951 में 361 लाख से 2001 में 1028.7 लाख हो गई।

जानकारी प्राप्त कीजिए – सारणी 6.1 से पता चलता है कि वृद्धि दर में कमी के बावजूद प्रत्येक दशक में लोगों की संख्या में नियमित रूप से वृद्धि हो रही है। ऐसा क्यों हो रहा है ?

सन् 1981 से वृद्धि दर धीरे–धीरे कम होने लगी। इस दौरान जन्म दर में तेजी से कमी आई फिर भी केवल 2001 में कुल जनसंख्या में 182 लाख की वृद्धि हुई थी। इतनी बड़ी दशकीय वृद्धि इससे पहले कभी नहीं हुई है।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

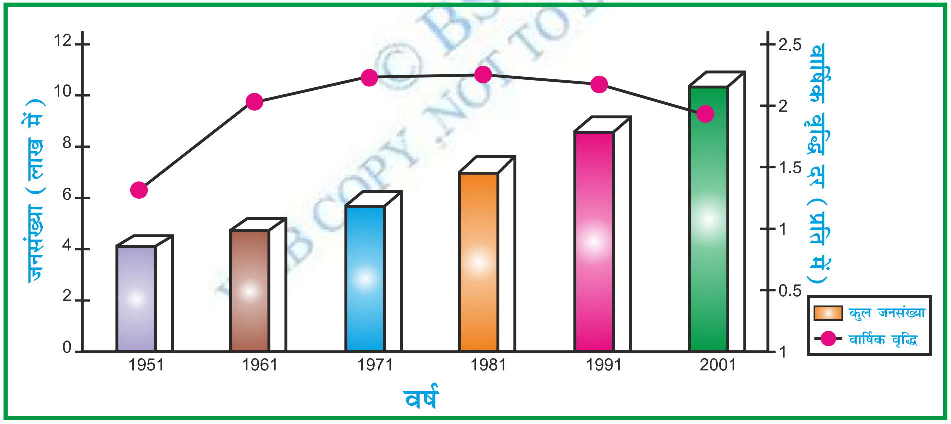

चित्र – 6.2 – कुल जनसंख्या एवं जनसंख्या वृद्धि 1951–2001

इस पर ध्यान देना आवश्यक है कि भारत की आबादी बहुत अधिक है। विशाल आकार की जनसंख्या में कम वार्षिक वृद्धि दर सापेक्ष वृद्धि बहुत अधिक होती है। जब 10 करोड़ जनसंख्या में न्यूनतम दर से भी वृद्धि होती है तब भी जुड़ने वाले लोगों की कुल संख्या बहुत अधिक होती है। भारत की वर्तमान जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि 155 लाख है जो कि संसाधनों एवं पर्यावरणीय संरक्षण को निष्क्रिय करने के लिए पर्याप्त है।

वृद्धि दर में कमी जन्म दर नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सफलता को प्रदर्शित करता है। इसके बावजूद जनसंख्या की वृद्धि जारी है तथा 2045 तक भारत, चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व के सबसे अधिक आबादी वाला देश बन सकता है।

जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन की तीन मुख्य कारण है– **जन्म दर, मृत्यु दर** एवं **प्रवास।** जन्म दर एवं मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या की वास्तविक प्राकृतिक वृद्धि है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जीवित बच्चों का जन्म होता है, उसे **'जन्म दर'** कहते हैं। यह वृद्धि का एक प्रमुख घटक है क्योंकि भारत में हमेशा जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक रहा है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों के मरने वाले की संख्या को **'मृत्यु दर'** कहा जाता है। मृत्यु दर में तेज गिरावट भारत की जनसंख्या में वृद्धि की दर का प्रमुख कारण है।

1980 तक उच्च जन्म दर में धीमी गति से एवं मृत्यु दर में तीव्र गति से गिरावट के कारण जन्म दर तथा मृत्यु दर में काफी बड़ा अन्तर आ गया एवं इसके कारण जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक हो गई। 1981 से धीरे–धीरे जन्म दर में भी गिरावट आनी शुरू हुई जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि दर में भी गिरावट आई। इस परिवर्तन का प्रमुख कारण पारिवारिक, राजनैतिक, प्रशासनिक एवं धार्मिक स्तर पर नियोजित परिवार के प्रति जागरूकता है।

जनसंख्या वृद्धि का तीसरा घटक है प्रवास। लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाने को **प्रवास** कहते हैं। प्रवास आन्तरिक (एक जगह से दूसरे जगह जैसे उत्तरी बिहार में बाढ़, विस्थापित क्षेत्रों में या अंतरराज्य (एक राज्य से दूसरे राज्य में) या अन्तर्राष्ट्रीय (एक देश से दूसरे देश में) हो सकता है।

याद रखें–

1. वर्तमान विश्व में प्रत्येक 6 व्यक्तियों में एक भारतीय है।
2. पिछले दस वर्षों (1991–2001) में भारत की जनसंख्या में प्रतिवर्ष 1.82 करोड़ की वृद्धि हुई।
3. वर्त्तमान समय में मुम्बई महानगर की जनसंख्या आस्ट्रेलिया के कुल जनसंख्या से अधिक है।
4. भारत की कुल जनसंख्या में प्रति मिनट 29 व्यक्तियों की वृद्धि हो रही है।

©BSTBPC NOT TO BE REPUBLISHED WBR COPY

आन्तरिक प्रवास जनसंख्या के आकार में कोई परिवर्तन नहीं लाता है; लेकिन यह एक देश के भीतर जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करता है। जनसंख्या वितरण एवं उसके घटकों को परिवर्तित करने में प्रवास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

> **क्रियाकलाप-** अपने दादा-दादी, नाना-नानी और माता-पिता के जन्म के समय से तुम अपने परिवार में प्रवास की सूची बनाओ। प्रत्येक प्रवास के कारणों को ज्ञात करो।

भारत में अधिकतर आन्तरिक प्रवास ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में 'अपकर्षण' कारक प्रभावी होते हैं। ये ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों एवं बेरोजगारी की प्रतिकूल अवस्थाएँ हैं तथा नगर का 'कर्षण' (PULL) प्रभाव रोजगार में वृद्धि एवं अच्छे जीवन स्तर को दर्शाता है।

प्रवास जनसंख्या परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह केवल जनसंख्या के आकार को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उम्र एवं लिंग के दृष्टि कोण से नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या की संरचना को भी परिवर्तित करता है। भारत में- ग्रामीण-नगरीय प्रवास के कारण शहरों तथा नगरों की जनसंख्या में नियमित वृद्धि हुई है। 1951 में कुल जनसंख्या की 17.29 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी, जो 2001 में बढ़कर 27.78 प्रतिशत हो गई। एक दशक (1991 से 2001) के भीतर दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या 23 से बढ़कर 35 हो गयी है।

© BSTRPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

जनसंख्या की विशेषताएँ

अ - आयु संरचना

आयु संरचना के दृष्टि से भारतीय जनसंख्या को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। ये हैं-

1. किशोर वर्ग - 15 वर्ष से कम आयु
2. प्रौढ़ वर्ग - 15-19 वर्ष की आयु
3. वृद्ध वर्ग - 60 वर्ष या इससे अधिक

प्रौढ़ वर्ग की जनसंख्या को श्रमजीवी अथवा कार्यरत आयुवर्ग कहा गया है प्रथम और अंतिम वर्ग को आधारित जनसंख्या (Dependent population) कहा गया है।

भारत में किशोर वर्ग के अंतर्गत 36.5 प्रतिशत जनसंख्या है। प्रौढ़ वर्ग के अंतर्गत 56.7 प्रतिशत तथा वृद्ध वर्ग में 6.8 प्रतिशत जनसंख्या है। स्वास्थ्य सुविधाओं में तेजी से हो रहे सुधार के कारण वृद्ध वर्ग की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि की संभावना है। इसके विपरीत जनसंख्या नियंत्रण के प्रति बढ़ती जागरूकता और प्रबंधन के अनुकूल उपायों के कारण किशोर वर्ग में कमी आने की पूरी संभावना है कार्मिक या क्रियाशील वर्ग में जनसंख्या अनुपात में संभावित वृद्धि से रोजगार के नये आयामों को तलाशना होगा अन्यथा बेरोजगारी की समस्या विस्फोटक रूप ले सकती है।

क्रियाकलाप

1. आप अपने क्षेत्र में ऐसे कितने बच्चों को जानते हैं जो कि घरेलू सहायकों एवं श्रमिकों के रूप में कार्य करते हैं।
2. अपने गाँव या आसपास में शिक्षित बेरोजगारों की सूची बनाइये।

(ब) लिंग अनुपात

प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को लिंग अनुपात कहा जाता है। यह जानकारी किसी दिए गए समय में, समाज में पुरुषों एवं महिलाओं के बीच समानता की सीमा मापने के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक सम्यक है। देश में लिंग अनुपात महिलाओं के पक्ष में नहीं है। सन् 1951 से 2001 के बीच के लिंग अनुपात की सारणी 6.2 में दर्शाया गया है।

जनगणना वर्ष	लिंग अनुपात
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	929
2001	933

सारणी 6.2 : भारत में लिंग अनुपात 1951-2001

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

क्या आप जानते हैं ?– केरल में प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 1058 है। पांडिचेरी में प्रति 1000 पर 1001 है जबकि दिल्ली में प्रति 1000 पर 821 तथा हरियाणा में प्रति 1000 पर केवल 861 महिलायें हैं।

(स) साक्षरता दर

साक्षरता जनसंख्या का बहुत ही महत्वपूर्ण संसाधनात्मक गुण होता है। स्पष्टत: केवल एक शिक्षित और जागरुक नागरिक ही बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय ले सकता है तथा शोध एवं विकास के कार्यों को कर सकता है। साक्षरता स्तर में कमी आर्थिक प्रगति में एक गंभीर बाधक होता है।

2001 ई० की जनगणना के अनुसार एक व्यक्ति जिसकी आयु 7 वर्ष या उससे अधिक है जो किसी भी भाषा को समझ कर लिख या पढ़ सकता है उसे साक्षर की श्रेणी में रखा जाता है।

भारत की साक्षरता के स्तर में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। 2001 ई० की जनगणना के अनुसार देश की साक्षरता दर 64.84 प्रतिशत पुरुषों का 73 प्रतिशत एवं महिलाओं की 53.67 प्रतिशत है। परम्परागत मान्यताओं के कारण महिलाओं की साक्षरता दर कम है, लेकिन इसमें तेजी से सुधार हो रहा है।

(द) व्यावसायिक संरचना– आर्थिक रूप से क्रियाशील जनसंख्या का प्रतिशत विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक होता है। विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के अनुसार किए गए जनसंख्या के कार्यिक वितरण के व्यावसायिक संरचना कहते हैं। व्यवसायों को सामान्यत: प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

प्राथमिक व्यवसाय के अन्तर्गत कृषि, पशुपालन, वृक्षारोपण एवं मछली पालन तथा खनन जैसी क्रियाएँ शामिल है। द्वितीयक क्रिया कलापों में उत्पादन करने वाले उद्योग, भवन एवं अन्य निर्माण कार्य आते हैं। तृतीयक क्रियाकलापों में परिवहन, संचार, वाणिज्य, प्रशासन तथा विविध प्रकार की सेवाएँ आती हैं।

जानकारी प्राप्त कीजिए – भारत के पाँच सर्वाधिक साक्षर एवं पाँच सबसे कम साक्षर राज्यों का नाम।

विकसित एवं विकासशील देशों में विभिन्न क्रियाकलापों में कार्य करने वाले लोगों का अनुपात अलग–अलग होता है। विकसित देशों में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों में कार्य करने वाले लोगों की संख्या का अनुपात अधिक होता है। विकासशील देशों में प्राथमिक क्रियाकलापों में कार्यरत लोगों का अनुपात अधिक होता है। भारत में कुल जनसंख्या का 64 प्रतिशत भाग केवल कृषि कार्य करता है। द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों में कार्यरत लोगों की संख्या का अनुपात क्रमशः 13 तथा 20 प्रतिशत है।

© BSTBPC

(य) स्वास्थ्य - स्वास्थ्य आबादी विकास की प्रक्रिया को भी स्वस्थ एवं प्रभावकारी बनाता है। वर्तमान स्थिति में स्वास्थ्य सूचकों में लगातार सुधार हुआ है। मृत्यु दर, जो 1951 में (प्रति हजार) 25 थी, 2001 में घटकर (प्रतिहजार) 8.1 रह गयी है। औसत आयु जो कि 1951 में 36.7 वर्ष थी, 2001 में 64.6 वर्ष हो गयी है।

अधिकतर संक्रामक बीमारियों पर लगभग नियंत्रण कर लिया गया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बावजूद विकसित देशों की तुलना में भारत का स्वास्थ्य स्तर निम्न है। प्रति व्यक्ति कैलोरी की खपत अनुशंसित स्तर से काफी कम है। तथा हमारी जनसंख्या का एक बड़ा भाग कुपोषण से प्रभावित है। शुद्ध पानी पीने के लिए तथा मूल स्वास्थ्य रक्षा सुविधाएँ ग्रामीण जनसंख्या के केवल एक – तिहाई लोगों को उपलब्ध ही है।

© BSTBPC FREE COPY NOT TO BE PUBLISHED

अतः भारत के लिए आवश्यक है कि जनसंख्या प्रबन्धन को राष्ट्रीय नीतियों में प्राथमिकता दें। शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार लाकर ही कोई भी देश अपनी जनसंख्या को संसाधन में बदल सकता है। हर रोज के दंगे, मारपीट और हिंसा में संलग्न बहुत बड़ी युवा शक्ति का सही प्रबन्धन उसे कल के भारत का सिरमौर बना सकता है।

जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव

विस्फोटक जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव बहुआयामी है। स्वतंत्रता के बाद भारत के खाद्य–उत्पादन, रोजगार के अवसरों और औद्योगिक संरचना में भारी वृद्धि हुई है। लेकिन इसके बावजूद बढ़ती जनसंख्या के ही कारण भारत विकास की इन ऊँचाइयों को विकसित राष्ट्र में तब्दील नहीं कर सका। आज भी भारत में आधे से अधिक बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। अभी भी प्रति व्यक्ति खाद्य उपलब्धता 450 ग्राम प्रतिदिन से कम है।

विश्व में सर्वाधिक निरक्षर और सर्वाधिक बेरोजगार भारत में ही है। निरक्षर और बेरोजगार का यह समूह स्वतंत्र भारत की विस्फोटक जनसंख्या वृद्धि का परिणाम है।

आज भी कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव लगातार बढ़ रहा है क्योंकि अधिकतर जनसंख्या गाँवों में रहती है। भूमि सीमित है और इसके उपयोग करने वालों का आकार वृहद हो गया है। परिणाम स्वरूप वैसे भूमि पर भी कृषि, पशुचारण और अधिवास का दबाव पड़ने लगा है जो प्रकृति के नियमों के अनुरूप पारिस्थितिक संतुलन के अंग थी। भारत के वनीय क्षेत्र, मरुस्थलीय क्षेत्र और नम भूमि में लगातार कमी आ रही है। कभी हिमालय पर्वतीय क्षेत्र जैविक विविधता का भंडारगृह था। आज हिमालय के राज्यों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, पर्यटन विकास, धार्मिक यात्राओं में वृद्धि तथा उद्योग और नगरों के बढ़ते विकास के कारण जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और सिक्किम जैसे राज्यों में 40 प्रतिशत से भी कम भूमि पर वन है। जबकि यहाँ 60 प्रतिशत भूमि पर वन होने चाहिए।

1960 के दशक में जब हरित क्रांति का आगमन हुआ तो पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान के अर्द्धमरुस्थलीय क्षेत्रों में आधुनिक कृषि का विकास हुआ। इससे खाद्य पदार्थों के मामले में लगभग आत्मनिर्भर हो गया लेकिन मृदा-प्रदूषण और पारिस्थितिकी असंतुलन की चुनौती छोड़ गया है।

इसी प्रकार ग्रामीण जनसंख्या में भारी वृद्धि के कारण ग्रामीण नगरीय स्थानांतरण की प्रक्रिया तीव्र हो गई है। नगरों में ग्रामीण गरीबों की बढ़ती भीड़ से अनौपचारिक व्यवस्था, मलिन बस्ती, झुग्गी-झोपड़ी और अतिक्रमणित बस्तियों के विकास ने नगरीय पारिस्थैतिकी को बर्वाद कर दिया है। वर्त्तमान समय में मुंबई विश्व का दूसरा सबसे बड़ा नगर बन चुका है। यहाँ प्रतिवर्ष औसतन 3-4 लाख बाहर से आकर बसते हैं इसका मूल कारण जनसंख्या विस्फोट ही है।

गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता और कुपोषण चार ऐसे स्तंभ हैं जो विकासशील भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती है और इनकी जड़ें जनसंख्या विस्फोट के आधारभूत संरचना पर आधारित है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति

जनसंख्या विस्फोट से उत्पन्न हो रही समस्या को ध्यान में रखकर प्रथम पंचवर्षीय योजनाकाल से ही जनसंख्या नियंत्रण की नीति अपनाई जा रही है। भारत विश्व का पहला देश है जिसने प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान परिवार नियोजन कार्यक्रम को सरकारी कार्यक्रम घोषित किया। आज भी विश्व में सर्वाधिक परिवार कल्याण केंद्र भारत में है,

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

लेकिन परिवार नियोजन की स्वैच्छिक नीति के कारण जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में कोई विशेष सफलता नहीं मिली है।

अत: 1976 ई० में राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या नीति की घोषणा की गई जिसमें लड़के और लड़कियों के विवाह की आयु न्यूनतम क्रमश: 21 और 18 वर्ष रखा गया। केरल जैसे राज्य में साक्षरता को प्राथमिकता देकर जनसंख्या नियंत्रण का अप्रत्यक्ष प्रयास प्रारंभ किया गया। इसमें भारी सफलता भी मिली। इस सफलता को आधार मानकर आठवीं पंचवर्षीय योजना से अप्रत्यक्ष कार्यक्रमों को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इसमें महिलाओं के सशक्तिकरण, रोजगार की संभावनाओं का सृजन, गरीबी निवारण, द्वितीयक और तृतीयक रोजगार में लगे हुए लोगों के लिए प्रोत्साहन और हतोत्साहन की नीतियाँ तथा जनसंख्या के आधार पर 2026 ई० तक लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभा के सीटों में वृद्धि न करने का निर्णय अधिक कारगर साबित हो रहा है। 2002 ई० की जनसंख्या नीति में स्पष्ट किया गया है कि 2045 तक भारत की जनसंख्या स्थिर हो जायेगी। वस्तुत: भारत की जनसंख्या नीति छोटा परिवार सुखी परिवार के नीति पर आधारित है।

©BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारत में सर्वाधिक साक्षरता दर किस राज्य की है ?

(अ) पश्चिम बंगाल (स) महाराष्ट्र

(ब) बिहार (द) केरल

2. भारत की औसत आयु संरचना क्या है ?

(अ) 64.6 वर्ष (स) 64.9 वर्ष

(ब) 81.6 वर्ष (द) 70.2 वर्ष

3. 2001 ई० की जनगणना में प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं के अनुपात की क्या स्थिति है ?

(अ) 927 महिलायें (स) 990 महिलायें

(ब) 933 महिलायें (द) 1010 महिलायें

4. भारत का औसत जनसंख्या घनत्व प्रतिवर्ग कि० मी० क्या है ?

(क) 318 व्यक्ति (ग) 325 व्यक्ति

(ख) 302 व्यक्ति (घ) 288 व्यक्ति

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 1951 ई. में भारत की जनसंख्या कितनी थी?
2. भारत में 2001 ई. में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत क्या था?
3. केरल में प्रति 1000 पुरुष पर महिलाओं की संख्या क्या है?
4. भारत की साक्षरता दर का वर्णन करें।
5. भारत के लिंग अनुपात की विशेषताओं को बतायें।
6. जनगणना से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं को बतायें।
2. भारत के विषम जनसंख्या घनत्व का वर्णन कीजिए।

© BSTBPC
© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED